केसरीमलजी सुराणा अभिनन्दन ग्रन्थ (फोल्डर नं. ०१२०४४)

मुख्य टाइटल
समर्पण
प्राक्कथन
प्रकाशकीय
सम्पादकीय
सन्देशे-शुभकामनाएँ
विषय- वर्गीकरण सूची
प्रथम खण्ड – व्यक्तित्व, कृतित्व, संस्मरण तथा काव्याँजली
कर्मयोगी श्री केशरीमलजी सुराणा जीवन परिचय--१
ग्रहों का गणित काकासा का फलित संस्मरण--१९
संस्मरण
संस्मरणों की सौरभ--२३
मेरे सर्वस्व मेरे भाई साहब..--३१
खीर वापस कर दो--३२
मरना एक बार है--३२
जब पैर में काँटा चुभ गया--३३
कौन कहता है सुराणाजी कठोर हैं--३३
अटल नियम पौरुष के खिलाडी--३३
मंत्र की शक्ति ये सब हमारी सन्ताने हैं--३४
काकासा की विनम्रता--३५
साक्षात राजा मोहजीत--३५
वेदनीय कर्म समता से काटूंगा अरे ये तो साधु हैं--३६
नानकशाही डण्डा हाथ में ले लो--३६
पैसे- पैसे का हिसाब, जब घडी पुरस्कार में दी--३७
वृथा आपको दोषी क्यों बनाऊ--३८
मुझे लठ मारो--३८
जब गाडी का ब्रेक फैल हो गया--३९
उनके शब्दों की शक्ति-- ४
कर्म के साथ धर्म का समन्वय--४०
आशीर्वचन
विरल विशेषाताओं के धनी--४१
समाज के नररत्न--४२
धर्म और कर्म के युगपत उपासक--४२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्वाध्यायप्रिय श्रावक-- ४३
आगमिक श्रावक परम्परा के रत्न---४४
सेवाभावी श्रावक---४४
कमल से निस्पृह--- ४६
कलयुग के शिवशंकर--- ४६
जे कम्मे सूरा तो घम्मे सूरा-- ४६
कर्मशील योगी -- ४८
अजब गजब रा श्रावक--४८
संयम की साकार मूर्ति ---४८
ब्रह्मचारी साधक -- ४९
नव- समाज के निर्माता --- ४९
अनासक्त योगी --४९
कंटिली झांडियों में मुस्कराता फुल -- ५०
व्यक्तित्व व कृतित्व की पूजा -- ५१
पडिमाधारी श्रावक -- ५१
निर्लिप्त जीवन--- ५२
शासनदेवी शासनभक्त-- ५२
नवीन प्रेरणाओं के उदघाटक --- ५२
सदशिक्षा के प्रेरक--५३
मणि- कांचन सुयोग---५३
धर्म और कर्म के संगम ---५४
त्याग का नवीन आदर्श--५४
प्रकाश के अन्वेषक---५४
समय के सूक्ष्म अन्वेषक --५५
आस्थाओं के सिंहासन पर आरुढ---५५
विसर्जन के पुनित प्रतीक--५५
विवेकानन्द की याद -- ५६
बेजोड संचालक-- ५६
कर्मशक्ति का अनूठा उदाहरण -- ५६
सजग प्रहरी--५७
प्राणों के प्रतिष्ठापक---५७
अनुशासनप्रिय--- ५८
व्यक्ति नहीं, संस्था ---५८
साधना के सजग प्रहरी --५९
गांधी और करतूरबा --५९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विरल्र ओजस्वी वक्ता-- ५९
उत्कृष्ट सेवक-- ६०
जागरुक साधक -- ६०
साधना का त्रिवेणी संगम -- ६१
निस्पृह कार्यकर्ता -- ६१
फलदार वृक्ष-- ६१
युवा हृदय ज्ञानपुञ्ज -- ६२
गुणवान पूज्यते -- ६२
तपस्वियों के ताज-- ६३
जीवन की जागती मशाल-- ६३
मेढिभूअ श्रावक-- ६४
श्रद्धा- सुमन
संस्था के प्राण -- ६५
एक युग द्रष्टा, एक युग गौरव-- ६६
पुरुषार्थ की प्रतिमूर्ति -- ६७
संस्कार- सर्जन-- ६८
अहम विजेता लोह पुरुष -- ६९
एक अदभूत शक्ति पुञ्ज -- ७०
नरश्रेष्ठ योगी -- ७१
तेरापंथ जगत के प्रथम मालवीय-- ७१
अदभूत व्यवस्थाशक्ति के प्रतीक-- ७२
व्यक्ति नहिं एक संस्था -- ७३
श्रमण परम्परा के सूर्य -- ७३
मानवता के उन्नायक-- ७४
निवृति और प्रवृत्ति के अदभूत संयोजक-- ७४
अनुकरणीय आदर्श व्यक्तित्व -- ७५
राणावास का गांधी -- ६५
एकता व समन्वय के प्रतीक-- ७६
त्याग के मूर्तिमान रुप -- ७६
A princely beggar-- 77
सूर्य की चाल की तरह नियमित -- ७७
मारवाड का गरिमा पूर्ण नक्षत्र -- ७८
जैन समाज के उज्जवल नक्षत्र-- ७८
एकनिष्ठ सेवक -- ७९
नवयुग का भागीरथ -- ७९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूझ-बूझ की त्रिवेणी-- ८०
उच्चकोटि के शिक्षाशास्त्री --- ८०
आत्म- साधना के धनी--८१
तेरापंथ के सुफी संत --८१
स्वभावसिद्ध गुणों के आकर-- ८२
एक दुर्लभ विभूति--- ८३
युगपुरुष नररत्न---८४
सर्वस्व त्यागी महापुरुष---८४
समर्पित व्यक्तित्व --८५
समाज के गौरव---८५
प्रेम के पुजारी--८५
निस्वार्थ सन्त- पुरुष --- ८६
गण एवं गणपति के प्रति समर्पित--- ८६
नये मानव के निर्माता---८७
एक प्रखर व्यक्तित्व---८७
अविस्मरणीय कर्मयोगी---८७
मानव सेवा के मन्त्रदाता -- ८८
छात्रों के प्राण --- ८९
त्यागलोक की दिव्य आत्मा --- ८९
कार्यकुशलता के जीवन्त प्रमाण-- ९०
प्रथम अग्रेसर दीपक--- ९०
संकल्पों के साधक--९१
जितने कठोर, उतने कोमल--९१
कलात्मक जीवन के उदघोषक --- ९२
संघर्ष में सुमेरुसम अटल --- ९२
सन्त या समाज सेवक -- ९३
सफल समाज सुधारक-- ९३
समुद्र की तरह गहरे--- ९३
विश्वासपात्र विभूति -- ९४
समय की कसौटी पर खरे --- ९४
अवर्णनीय गौरव गाथा--- ९४
प्रतिभासम्पन्न व प्रेरक-- ९५
अंध परम्पराओं के विरोधी--- ९५
सच्चे छात्र- हितैषी -- ९५
जैनशासन के ज्योति पुज्ज -- ९६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विवादो से मुक्त-- ९६
निर्धन के धन-- ९६
काव्यांजलियाँ
सेवा रो ईतिहास--९७
श्याम देह बापू सी-- ९८
शत- शत वन्दन -- ९८
काकासा की अलख कहानी--- ९९
भूल्या कदे न जाय --- १००
हर मधुपान के पश्चात भी--१०१
प्रणाम --१०१
कुण्डलिया-- १०२
तुम्हारे कर्म की गाथा -- १०३
जनम सुधार्यो ओ --- १०३
नव ईतिहास सुनाएँ--१०४
उभरा है व्यक्तित्व एक---१०४
कोटि- कोटि अभिनन्दन --१०५
युगों- युगों तक कई करेंगे याद --- १०६
कर्मठ काको केसरी-- १०६
रंग अनूठो ल्यावै ---१०७
एक विभूति --- १०८
लौह पुरुष-- १०८
अभिनन्दन-- १०९
श्रेय पथ पर -- १०९
तेरे ही गुण गायें हैं---११०
यह जीवन लुटायो है --११०
अलबेला साधक --- १११
त्याग का उत्कर्ष--- १११
जुगजुग जीयो---११२
ऋषि केसरी--११३
आस्थावान श्रावक --११३
काम कमाल करयो--- ११४
श्रम सूं फल्यो बगीचो सारो --- ११४
भक्तों में जिनका नाम हैं-- ११५
शासन भक्त श्रावक -- ११५
कृपापात्र गुरुवर के---११६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मारवाड रत्न ---११६
दो मुक्तक ---११६
सच्चा केसरी कहलाया --- ११७
हे मानव के मसीहा--- ११७
प्रणतांजलि ---११८
योग्य व्यक्तित्व ---११८
अभिनन्दन पत्र (विविध) ---११९-१४६
नारीरत्न श्रीमती सुन्दरदेवी सुराणा (माताजी)--१४७
द्वितीय खण्ड - श्री जैन श्वेताम्बर मानव हितकारी संघ, (राणावास) और उसकी प्रवृतियाँ
कांठा का भौगोलिक और सांस्कृतिक परिवेश -- १५१
भिक्षुजन्मस्थली-कंटालिया ---१५७
अभिनिष्क्रमणस्थलो- बगडी-- १६०
निर्वाण स्थली-सिरियारी --१६१
विधाभूमि-राणावास --- १६४
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी मानव हितकारी संघ---१७०
उच्च शिक्षा का अनुपम स्थल-- १९४
महाविधालयीय छात्रों का आवासीय केन्द्र --२१७
सर्वांडीगण शिक्षा का सिंह द्वार -- २२१
प्राथमिक-माध्यमिक छात्रों का आवास स्थल.. ---२३६
छात्र चिकित्सा केन्द्र-सेठ श्री मोतीलाल बैंगाणी..---२५१
ग्रामीण चिकित्सा केन्द्र श्री हस्तीमल धीसूलाल -- २५३
श्री पी एच रुपचन्द डोसी जैन उच्च प्राथमिक... --- २५४
संघ की विशाल ऐतिहासिक यात्रा ---२५९
श्री अखिल भारतीय जैन महिला शिक्षण संघ..---२६८
तृतीय खण्ड - शिक्षा एवं समाज सेवा
शिक्षा एवं सामाजिक परिवर्तन – श्री भवानीशंकर गर्ग ---१
शिक्षा का उद्देश्य – डॉ. प्रभु शर्मा ---६
शिक्षा और छात्र मनोविज्ञान – डॉ. जी. सी. राय ---९
हमारे शिक्षालय और लोकोत्सव – पद्मश्री देवीलाल सामर --१३
लोकधर्मी प्रदर्शनकारी कलाओं की शैक्षिक उपयोगिता – डॉ. महेन्द्र भानावत ------------------ १७
शिक्षा और संचार साधनों की भूमिका – प्रो. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल --------------------------------२१
अनौपचारिका शिक्षा संकल्पना एवं स्वरुप – डॉ. शिवचरण मनोरिया------------------------- २६
माध्यमिक शिक्षा और सरकारी दृष्टि – श्रीमती सुषमा अरोड़ा --------------------------------- ३३
शिक्षण में सृजनात्मकता – प्रो. भगवतीलाल व्यास --- ३८
ईम्तिहान पर क्षण भर – डॉ. विश्वम्भर व्यास --४४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शिक्षा और बेरोजगारी – डॉ. जी. एल. चयलोत ---------- ४७
छात्र असन्तोष क्यों – श्री बी. पी. जोशी ---------- ५१
बच्चों में चरित्र निर्माण दिशा और दायित्व – श्री उदय जारोली ---------- ५४
छात्रों में संस्कार निर्माँण घर, समाज व शिक्षक की भूमिका – श्री भँवरलाल आच्छा ---------- ६१
छात्र, छात्रावास और संस्कार – मुनि श्री मुखलाल ---------- ६५
बच्चों का चारित्र-निर्माण – श्रीमती कुमुद गुप्ता ---------- ६८
अभिभावकों का दायित्व – साध्वीश्री जयमाला ---------- ७२
छात्र- अध्यापक सम्बन्ध – साध्वीश्री गुणितप्रभाश्रीजी ---------- ७६
क्या धार्मिक शिक्षा उपयोगी है – साध्वीश्री रमाकुमारी ---------- ७८
नैतिक शिक्षा की व्यावहारिकता – साध्वीश्री ललितप्रभाश्रीजी ---------- ८१
विभिन्न छात्रवृत्तियाँ महत्व और प्रकार – श्री रणजीतसिंह भण्डारी ---------- ८३
नारी शिक्षा का लक्ष्य एवं स्वरुप – श्रीमती विद्या बिन्दु सिंह ---------- ८७
नारी शिक्षा का महत्व – साध्वीश्री जयश्री ---------- ९२
सेवा आत्म कल्याण भी लोक कल्याणक भी – डॉ. नरेन्द्र भानावत ---------- ९५
सेवा अर्थ और सही समझ – साध्वी श्री यशोधरा ---------- ९७
समाज सेवा में नारी की भूमिका – श्रीमती मालती शर्मा ---------- १०१
समाज के विकास में नारी का योगदान – साध्वीश्री मंजुला ---------- १०५
जैन विश्वभारती लाडनूं एक परिचय – डॉ. कमलेशकुमार जैन ---------- १०७
जनसारक्षरता और राष्ट्र निर्माण – प्रो. बी. एल. धाकड़ ---------- ११२
चतुर्थ खण्ड - जैन धर्म, दर्शन एव साधना
नमस्कार महामंत्र एक विश्लेषण – युवाचार्य श्री महाप्रज्ञजी ---------- ११७
जैन धर्म सर्व प्राचीन धर्मपरम्परा – डॉ. ज्योतिप्रसाद जैन ---------- १२७
जैन प्रमाणशास्त्र एक अनुचिन्तन – डॉ. दरबारीलाल कोठिया ---------- १३०
जैन आचार दर्शन एक मूल्यांकन – डॉ. सागरमल जैन ---------- १३७
विभिन्न दर्शनों में योगजन्य शक्तियों का स्वरुप – साध्वीश्री संघमित्राश्रीजी ---------- १४८
भारतीय योग और जैन चिन्तनधारा – डॉ. छग्गनलाल शास्त्री ---------- १५९
शब्द- अर्थ सम्बन्ध जैन दार्शनिकों की दष्टि में – डॉ. हेमलता बोलिया ---------- १७४
ब्रह्मांड, आधुनिक विज्ञान और जैन दर्शन – श्री बी. एल. कोठारि ---------- १८०
जैन धर्म और लोकतन्त्र – प्रो. चन्द्रसिंह नानावटी ---------- १८७
जैन रहस्यवाद - डॉ. पुष्पलता जैन ---------- १९५
जैन दर्शन और ईश्वर की परिकल्पना – डॉ. महावीर सरल जैन ---------- २०६
आत्मा स्वरुप विवेचन – श्री राजेन्द्र मुनि ---------- २१२
जैन धर्म में कर्म-सिद्धांन्त – साध्वीश्री जतनकुमारि ---------- २२०
संलेखना स्वरुप और महत्व – श्री देवेन्द्र मुनि शास्त्री ---------- २२७
समाधिमरण – श्री चन्दन मुनि ---------- २४२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तप एक महत्वपूर्ण अनुष्ठान – मुनि श्री सुमेरमल--- २४५
जैन परम्परा में संघीय साधना का महत्व – साध्वीश्री कंचनकुमारि -------------------------२५१
द्रव्य एक अनुचिन्तन – वैद्यश्री राजेन्द्रकुमार जैन-- २५५
जैन धर्म का प्राण- स्याद्वाद – डॉ. महावीरसिंह मुंडिया--२५९
अपरिग्रहवाद आर्थिक समता का आधार – डॉ. फूलचन्द्र जैन प्रेमी----------------------------२६५
अनुयोग और उनके विभाग – मुनि श्री किसनलाल --२६९
जैन धर्म के मूल तत्व एक परिचय – श्री स्वरूपसिंह चुडावत ------------------------------- २७५
उपाध्याय पद स्वरुप और दर्शन – श्री रमेश मुनि शास्त्री-------------------------------------२७९
जैन मुनि और वस्त्र- परम्परा – मुनि श्री श्रीचन्द---२८४
दशवैकालिक और जीवन का व्यावहारिक दृष्टिकोण – साध्वीश्री कनकश्रीजी------------------ २८७
श्रमण चर्या विषयक कुन्दकुन्द की दृष्टि – डॉ. रमेशचन्द्र जैन--------------------------------२९७
पडिमाधारी श्रावक एक परिचय – साध्वीश्री जतनकुमारी -------------------------------------३०३
तेरापंथ दर्शन – मुनिश्री उदितकुमार ---३०५
तेरापंथ और अनुशासन – मुनि श्री सुमेरमल -- ३०९
अणुव्रत और अणुव्रत आन्दोलन – श्री सतीशचन्द्र जैन-- ३१२
जैन दर्शन में मानववादी चिन्तन – श्री रतनलाल कामड़------------------------------------- ३१९
स्वानुभूति की ओर अन्तर्यात्रा – श्री सोहनराज कोठारी------------------------------------- ३२७
पंचम खण्ड - जैन साहित्य एवं संस्कृति
तेरापंथी जैन व्याकरण साहित्य – साध्वी श्री कनकप्रभाश्रीजी---------------------------- ३३१
संस्कृत- जैन-व्याकरण परम्परा – डॉ. गेहरीलाल शर्मा -------------------------------------३४३
जैन आयुर्वेद परम्परा और साहित्य – डॉ. राजेन्द्रप्रसाद भटनागर------------------------३६३
जैन मंत्र शास्त्रों की परम्परा और स्वरुप – श्री सोहनलाल गौ.--------------------------- ३७४
जैन ज्योतिष प्रगति और परम्परा – डॉ. राजेन्द्रप्रसाद भटनागर -------------------------३९२
जैन गणित परम्परा और साहित्य – वैद्य सावित्री देवी ------------------------------------४१४
जैन साहित्य में कोश परम्परा – श्री विद्यासागर राय-------------------------------------४१९
जैन छन्द शास्त्र परम्परा – श्री नरोत्तम नारायण गौतम-------------------------------- ४३४
तेरापंथ में संस्कृत का विकास – मुनि श्री विमलकुमार -----------------------------------४३९
राजस्थान का जैन संस्कृत साहित्य – डॉ. प्रेमचंद रांका-------------------------------- ४४२
राजस्थान के जैन संस्कृत साहित्यकार – डॉ. शक्तिकुमार शर्मा ------------------------ ४४७
धूर्ताख्यान पार्यन्तिक व्यंग्य- काव्य कथा – डॉ. श्री रंजनसूरिदेव ------------------------४६२
प्राकृत कथा साहित्य का महत्व – डॉ. उदयचन्द जैन-----------------------------------४६६
प्राकृत विभिन्न भेद और लक्षण – श्री सुभाष कोठारि--------------------------------- ४७२
अपभ्रंश साहित्य- परम्परा – डॉ. देवेन्द्रकुमार शास्त्री -------------------------------------४८०
अपभ्रंश साहित्य में कृष्णकाव्य – डॉ. हरिवल्लभ चुनीलाल भायाणी -------------------- ४८७
अपभ्रंश साहित्य में रामकथा – डॉ. देवेन्द्रकुमार जैन --------------------------------- ४९७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अपभ्रंश चरिउ काव्यों की भाषिक संरचनाएँ – डॉ. कृष्णकुमार शर्मा---------------------------५०२
अपभ्रंश के प्रबन्ध काव्य – डॉ. प्रेमसुमन जैन--- ५१०
राजस्थानी जैन साहित्य की रुप परम्परा – डॉ. मनमोहनस्वरूप नाथूर ------------------- ५१६
तेरापंथ का राजस्थानी गध साहित्य – मुनि श्री दुलहराज---------------------------------५२६
राजस्थानी दिगम्बर जैन गधकार – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल--------------------------------- ५४५
राजस्थानी काव्य परम्परा में सुदर्शन चरित – मुनिश्री गुलाबचन्द निर्मोही --------------- ५५९
महाकवि धनपाल व्यक्तित्व और कृतित्व – श्री मानमल कुदाल----------------------------५७७
आचार्य नेमिचन्द्र सूरि और उनके ग्रन्थ – श्री हुकमचन्द जैन----------------------------- ५८३
आचार्य रामचन्द्र- गुणचन्द्र एवं उनका नाट्य दर्पण – डॉ. कमलेशकुमार जैन------------५८९
अभयसोमसुन्दर कृत विक्रम चौबोली चउपि – डॉ. मदनराजजी महेता-------------------- ५९४
महान साहित्यकार तथा प्रतिभाशाली- श्री मज्जयाचार्य – साध्वीश्री चीकांजी नाहर-------- ६०१
आचार्य तुलसी एक साहित्यिक मूल्यांकन – डॉ. भँवर सुराणा ---------------------------- ६०६
आगम पाठ संशोधन एक समस्या एक समाधान – मुनिश्री दुलहराज -------------------- ६०९
तेरापंथ सम्प्रदाय और नई कविता – प्रो. बी. एल. आच्छा ------------------------------ ६१७
जैन भक्ति साहित्य – प्रो. महेन्द्र रायजावा---६२५
रयणसेहरी कहा एवं जायसी का पदमावत – कु. सुवा खाव्या----------------------------६३२
जैन कथा साहित्य में नारी – डॉ. सुशिला जैन ---६४२
हिन्दी जैन गीतिकाव्य में कर्म-सिद्धान्त – प्रो. श्रीचन्द जैन ------------------------------ ६४७
जैन कवियों के ब्रज भाषा प्रबन्ध काव्य – डॉ. लालचन्द जैन -------------------------- ६५७
हिन्दी के नाटकों में तीर्थंकर महावीर – डॉ. लक्ष्मीनारायण दुबे-------------------------- ६६०
षष्टम खण्ड - ईतिहास और पुरातत्व
वैशालि गणतन्त्र का ईतिहास – श्री राजमल जैन--१
ओसियां की प्राचीनता – प्रो. देवेन्द्र हाण्डा---११
विदेशो में जैन धर्म – डॉ. भागचन्द्र जैन--- २०
मेवाड के शासक एवं जैन धर्म – श्री जसवन्तलाल महेता ----------------------------------२७
नयचन्द्र सूरिकृत- हम्मीर महाकाव्य और सैन्य व्यवस्था – डॉ. गोपीनाथ शर्मा --------------- ४०
गोडवाड के जैन शिलालेख – श्री रामवल्लभ सोमानी-- ४३
नागौर के जैन मन्दिर और दादा बाडी – श्री भँवरलाल नाहटा----------------------------------४७
सिरोही जिले में जैन धर्म – डॉ. सोहनलाल पाटनी---५५
तमिलनाडु में जैन धर्म और जैन संस्कार – मुनिश्री सुमेर मल---------------------------------५८
जैन जातियों का उदभव एवं विकास – डॉ. कैलाशचन्द्र जैन-------------------------------६१
जैन जाति और उसके गोत्र – डॉ. बलवन्तसिंह महेता-- ६३
भट्टारक परम्परा – डॉ. बिहारीलाल जैन-- ६६
जैन यति परम्परा – श्री अगरचन्द नाहटा--- ७१
तेरापंथ की अग्रणी साध्वियाँ – साध्वीश्री मधुस्मिता ---७९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माण्डु के जावड शाह – डॉ. सी. सी. क्राउझे --- ८६
तेरापंथ के दृढधर्मी श्रावक अर्जुनलालजी पोरवाल – मुनिश्री बुद्धमल---------------------------- ९४
तेरापंथ के महान श्रावक – मुनि श्री विजयकुमार -- ९९
बलिदान और शौर्य की विभूति भामाशाह – डॉ. देवीलाल पालीवाल ----------------------------११०
जोधपुर के जैन वीरों सम्बन्धी ऐतिहासिक काव्य – श्री सौभाग्यसिंह शेखावत---------------- ११५
अहमदाबाद युद्ध के जैन यौद्धा – श्री विक्रमसिंह गुल्वोज ------------------------------------ १२९
मेवाड के जैन वीर – श्री शम्भूसिंह --१३४
जैन संस्कृति की विशेषतायें – डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी--१४४
जैन मूर्तिकला की परम्परा – डॉ. मारुतिनन्दन प्रसाद---------------------------------------१५०
जैन कला विकास और परम्परा – डॉ. शिवकुमार नामदेव------------------------------------१५३
राजस्थान की जैन कला – श्री अगरचन्द नाहटा -- १६३
राजस्थान जैन चित्रकला कुछ अप्रकाशित साक्ष्य – श्री ब्रजमोहनसिंह परमार----------------- १७१
मेवाड की प्राचीन जैन चित्रांकन- परम्परा – डॉ. राधाकृष्ण वशिष्ठ ----------------------------१७४
जैन धर्म और आधुनिक चिकित्सा विज्ञान – आचार्य राजकुमार जैन ------------------------ १७९
राजस्थान स्वातन्त्र्य संघर्ष और जैन समाज – प्रो. तेजसिंह तरुण---------------------------- १८६

सप्तम खण्ड - आंग्ल भाषा

Jainism as a faith – Shreechand Rampuria --1
Jain literature as a source of social…- Dr. G. N. Sharma ---7
Rightness of action and jaina ethics – Dr. K. C. Sogani -- 13
Mahavira and ahimsa – Dr. D. S. Kothari-- 18
The concept of ahimsa in the acaranga – Dr. Veena Agarwal---------------------------------- 21
Jinasena and his political philosophy – Rajmal Jain--- 26
Jaina path of education – B. K. Khadabadi --- 33
A short sketch of early education – S. Mookarjee-- 38
Art and jconography under jainism jewellery in jain literature of rajasthan –
Kusum Mehta--- 43
Scouting in educational perspective – J. S. Mehta-- 45
Education in economic perspective – B. L. Dhakar-- 49
Community education in national perspective – Mrs. Kailash Mehta ------------------------ 57
Social justice to mankind - Pushpa Kothari --- 61
Ryle’s concept of the category mistake - Jagat Pal-- 65
The saint of ranawas - S. C. Tel--- 71